INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 5, May 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

संगीत में अनाहत नाद तत्व: एक दार्शनिक एवं प्रयोगात्मक विवेचन

रंजू असिस्टेंट प्रोफेसर संगीत (गायन)
रा.महावि.झंडूत्ता,जिला बिलासपुर (हि.प्र.)
ranju66081@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय संगीत के मूलाधार नाद के सूक्ष्म स्वरूप अनाहत या अनहद् नाद की गहन विवेचना करता है। सृष्टि की उत्पत्ति नाद से हुई है, जिसके दो मुख्य स्वरूप हैं आहत और अनाहत। जहाँ आहत नाद भौतिक संघर्ष से उत्पन्न होता है और प्रयोगात्मक संगीत का आधार है वहीं अनाहत नाद वह स्वयंभू ध्वनि है जो आध्यात्मिक चेतना और संगीत साधना की पराकाष्ठा है। इस शोध के माध्यम से नाद के सूक्ष्म स्तरों उसकी साधना पद्धति और संगीतज्ञ के जीवन में इसकी सार्थकता को रेखांकित किया गया है।

कुंजीशब्द : मूलाधार, आध्यात्मिक, चेतना, पराकाष्ठा, पद्धति

नाद की अवधारणा

ब्रह्मांड का प्रत्येक तत्व अपने आकार और रूप के आधार पर एक निश्चित आवृत्ति (फ़्रीक्वेंसी) पर एक विशिष्ट कंपन उत्पन्न करता है, जिससे शांत से लेकर उच्च आवृत्ति तक की विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। इस दुनिया में ध्वनि ऊर्जा के बिना किसी भी चीज़ का अस्तित्व नहीं है और यदि ध्वनि का अस्तित्व समाप्त हो जाए तो संपूर्ण ब्रह्मांड एक निर्वात अवस्था में चला जाएगा। विभिन्न रूपों का आधार बनने वाले परमाणु एक मामूली दायरे में कंपन उत्पन्न करते हैं, जिसे मानव कान नहीं सुन सकता। यदि हम बारीकी से देखें, तो हम समझ सकते हैं कि ब्रह्मांड में मौजूद प्रकाश किरणें विभिन्न आवृत्तियों की ध्वनि तरंगों के अलावा और कुछ नहीं हैं।

पहला तत्व ध्वनि है।आध्यात्मिक और भौतिक दोनों जिसे नाद कहा जाता है। नाद सृष्टि के पांच तत्वों में से पहले तत्व यानी आकाश (अंतरिक्ष की अभिव्यक्ति है। संस्कृत में नाद शब्द का अर्थ ध्वनि या कंपन है। हालाँकि इसका महत्व श्रवण अनुभव से कहीं आगे तक जाता है। "नाद ब्रह्म" या ब्रह्मांड ध्वनि है। भारतीय दर्शन में एक केंद्रीय अवधारणा है। इस दृष्टिकोण के अनुसार ब्रह्मांड की शुरुआत एक एकल ध्वनि ॐ (ओम) से हुई थी, जो पूरी सृष्टि में गूंजती है। यह विचार प्राचीन हिंदू ग्रंथों, विशेष रूप से वेदों और उपनिषदों पर आधारित है, जो ध्वनि को ब्रह्मांडीय व्यवस्था और दिव्य अभिव्यक्ति का आधार मानते हैं।

सारंगदेव के अनुसार, शरीर नाद को इस प्रकार उत्पन्न करता है: बोलने की इच्छा से आत्मा मन को प्रेरित करती है, और मन शरीर के भीतर प्राण अग्नि को सक्रिय करता है। जो बदले में प्राण को बढ़ावा देता है। प्राण नाभि के मूल में विश्राम करता है और जैसे-जैसे वह हृदय, कंठ ,मस्तिष्क और मुख से होकर बहता है,धीरे-धीरे नाद को प्रकट करता है। नाद कंठ संगीत (गायन) का सटीक सार है। वाद्य संगीत इसलिए आकर्षक है क्योंकि यह नाद को समाहित करता है। नृत्य, गायन और वादन का अनुसरण करता है, इसलिए ये तीनों नाद पर निर्भर हैं।

भारतीय दर्शन और संगीत शास्त्र में नाद को ब्रह्म का साक्षात रूप (नादब्रह्म) माना गया है। महर्षि शारंगदेव ने संगीत रत्नाकर में स्पष्ट किया है कि चैतन्य स्वरूप परमात्मा ही नाद के रूप में अभिव्यक्त होता है। संगीत की त्रिवेणी गायन वादन और नृत्य पूर्णतः नाद पर आश्रित है। नाद की प्रक्रिया प्राण और अग्नि के संयोग से प्रारंभ होती है जो सूक्ष्म से स्थूल की ओर बढ़ती है। संगीत शास्त्र में नाद के दो अनिवार्य भेद बताए गए हैं: आहत (जो चोट से उत्पन्न हो और अनाहत (जो बिना चोट के सुनाई दे।

नाद तत्व

नाद दो अक्षरों ना+द से बना है। न से नकार तथा द से दकार। नकार शब्द से अर्थ प्राण वायु तथा दकार"शब्द से अर्थ अग्नि अर्थात् प्राण वायु तथा अग्नि के संयोग से अभिव्यक्त होने पर ही यह नाद" कहलाता है। प्राचीन विद्वान नाद को कभी भी स्थूल नहीं मानते थे, यह नाद की परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है-

"नकारं प्राणनामानं दकारमनलं विदुः।

जातः प्राणाग्नि संयोगात्तेन नादोभिधीयते ।।""""

उपरोक्त परिभाषा प्रतीक रूप में भी दार्शनिक है। इस परिभाषा ने नाद के स्थूल स्वरूप पर टिप्पणी नहीं की है, किन्तु नकार एवं दकार दोनों को पृथक-पृथक कर उनके संयोग को ही नाद कहा है।

नाद की उत्पत्ति के संदर्भ में अन्य मतों अनुसार

नाद के दो भेद माने गए हैं। एक आहत तथा दूसरा अनाहत। यथा –

आहतोनाहतश्चेति द्विधा नादो निगद्यते।

आहत नाद - आहत अर्थात् आघात। ध्वनि का जो रूप आघात से उत्पन्न हो, वह आहत नाद कहलाता है। पं. दामोदर के अनुसार आहत नाद ही "सांगीतिक नाद है। अर्थात् संगीत का अभिव्यक्ति माध्यम आहत नाद को कहा जा सकता है।

अनाहत नाद - अनाहत अर्थात् आहत रहित। वह ध्वनि जो बिना किसी आघात के उत्पन्न हो। जो केवल योगीजन ही सुनते हैं व समझते हैं और मुक्ति पाते हैं।

आकाश संभवो नादोयः सोनाहत संज्ञित।

तस्मिन्नाहते नादे विरामं प्राप्यः देवता।।

योगनापि महात्मानास्तदानाहत संज्ञकः।

मनोनिक्षिप्य संयाति मुक्तिं प्रयतमानसा:।।

उदाहरणस्वरूप कानों को उंगलियों से बंद करने पर जो ध्वनि साथ ही सुनाई देती है, वही अनाहत नाद है। संगीत चिंतक इस नाद को स्वयं भू गांधार का नाम भी देते हैं। तानपूरे में मध्य सा व तार सां के तार को छेड़ने पर स्वयं भू गांधार की ध्वनि तब सुनाई पड़ती है जब यह षडज ध्वनि अस्तामुखी होती है।

पाश्चात्य विद्वानों में कीट्स के अनुसार- "Heard melodies are sweet but those unheard are sweetest."

अर्थात् जो धुनें सुनाई पड़ती हैं वे मधुर हैं और जो अश्रुत हैं वे मधुरतम हैं। अनाहत को आलौकिक पराभौतिक तथा अनभिव्यक्त की संज्ञा दी गई है। यह कल्पना नाद के दार्शनिक पक्ष की द्योतक हैं। योगियों के हृदय में अनाहत नाद ही प्रकट होता है।

संगीत में नाद तत्व का महत्व नाद तत्व के महत्त्व को वर्णित करते हुए मतंग मुनि लिखते हैं

"न नादेन बिना गीतं न नादेन बिना स्वरः।

न नादेन बिना नृत्तं तस्मान्नादत्मकं जगत।।"

अर्थात् नाद के बिना न स्वर, न गीत और न ही नृत्य संभव है। अतः संपूर्ण जगत ही नादात्मक है।

इसके अतिरिक्त पं. अहोबल के अनुसार -

"नास्ति नादात्परोमंत्रः न देवः स्वात्मनः परः। नादानुसंधेः परापूजां न हि तृप्तेः परंसुखम्।

अर्थात् नाद से बड़ा कोई मंत्र, आत्मा से बड़ा कोई देव, नादानुसंधान से बड़ी कोई पूजा और तृप्ति से बड़ा कोई सुख नहीं है। इसी आधार पर नाद को नादब्रह्म कह कर उपास्य तत्व व उपासना का साधन माना गया है।

अनाहत नाद: स्वरूप एवं परिभाषा

अनाहत शब्द का अर्थ है "न आहत इति अनाहतः" अर्थात् वह ध्वनि जो दो वस्तुओं के आपस में टकराने से उत्पन्न नहीं हुई है। यह की वह शाश्वत गूँज है जो सदैव विद्यमान रहती है किंतु भौतिक कानों से परे है। योग शास्त्र के अनुसार यह ध्वनि हृदय स्थित अनाहत चक्र में स्वतः स्फूर्त होती है। योगियों की भाषा में इसे अनहद नाद या अविनाशी शब्द कहा गया है।

नाद की सूक्ष्मता के पाँच स्तर

एक संगीत साधक के भीतर नाद की अभिव्यक्ति पाँच क्रमिक स्तरों पर होती है जो स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाती है:

अति-सूक्ष्म - यह हृदय में स्थित केवल अनुभव का विषय है।

सूक्ष्म - यह कंठ प्रदेश में मानसिक संकल्प के रूप में होता है।

पुष्ट - यह तालु और मूर्धा में स्पष्टता ग्रहण करता है।

अपुष्ट - यह ध्वनि के प्रकटीकरण से ठीक पहले की अवस्था है।

कृत्रिम (आहत): यह वह बाहरी ध्वनि है जो गायन या वादन के माध्यम से हम सुनते हैं।

संगीत साधना और अनाहत की प्राप्ति - (चार अवस्थाएँ)

नाद योग के अनुसार संगीत साधना जब गहन होती है तो साधक चार चरणों से गुजरता है:

आरंभ अवस्था - स्वर और लय की प्राथमिक साधना।

घट अवस्था - शरीर के भीतर नाद की गूँज का अनुभव होना।

परिचय अवस्था - साधक को सूक्ष्म ध्वनियाँ (जैसे वीणा या बाँसुरी की गूँज) सुनाई देने लगती हैं।

निष्पत्ति अवस्था - साधक और संगीत एक हो जाते हैं। यहाँ अनहद ध्वनि स्वतः बजने लगती है, जो परम आनंद की स्थिति है।

अनाहत नाद की ध्वनियों के प्रकार

योग ग्रंथों के अनुसार अंतर्यात्रा में साधक को दस प्रकार के नाद सुनाई देते हैं : झंकार,घंटे की ध्वनि,शंख, वीणा, ताल, वेणु, बाँसुरी, मृदंग, भेरी और अंततः मेघ गर्जना जैसा गंभीर नाद। संगीत की साधना इन्हीं सूक्ष्म ध्वनियों को पकड़ने का एक माध्यम है।

आहत और अनाहत का अंतर्संबंध

यद्यपि व्यावहारिक संगीत आहत नाद के बिना संभव नहीं है, किंतु आहत नाद का मुख्य उद्देश्य साधक को अनाहत तक पहुँचाना ही है। आहत नाद साधन है और अनाहत नाद साध्य(लक्ष्य। जब एक गायक पूर्ण एकाग्रता के साथ षडज (सा) की साधना करता है तो बाहरी स्वर धीरे-धीरे आंतरिक मौन में विलीन हो जाता है, यही संगीत की सफलता है।

दार्शनिक विवेचन

अनाहत नाद का दर्शन सृष्टि की उत्पत्ति, मोक्ष और चेतना से जुड़ा हुआ है:

* उत्पत्ति का सिद्धांत : यह वह ध्वनि है जो बिना किसी दो वस्तुओं के टकराव या आघात के स्वतः उत्पन्न होती है। पूरी सृष्टि इसी मूल ध्वनि से प्रकट हुई है।

* ब्रह्म का स्वरूप (नादब्रह्म): भारतीय दर्शन में अनाहत नाद को नादब्रह्म यानी साक्षात् ईश्वर का रूप माना गया है। संगीत रत्नाकर में कहा गया है कि नाद की उपासना से ही त्रिगुणात्मक संसार की मुक्ति संभव है।

* ऋषियों और योगियों का अनुभव: यह भौतिक कानों से सुनाई नहीं देता। योग साधना (जैसे नादानुसंधान) के माध्यम से जब मन शांत और अंतर्मुखी होता है, तब हृदय चक्र (अनाहत चक्र) में यह ध्वनि सुनाई देती है।

* शाश्वत और अविनाशी: आहत नाद (जो हम सुनते हैं) नश्वर है, लेकिन अनाहत नाद नित्य, अनंत और अविनाशी है। यह ब्रह्मांड की मौन गूँज है।

प्रयोगात्मक विवेचन

संगीत में व्यावहारिक रूप से अनाहत नाद को सीधे गाया या बजाया नहीं जा सकता, लेकिन इसकी अनुभूति और अभिव्यक्ति के प्रयोग निम्नलिखित तरीकों से होते हैं:

* आहत से अनाहत की ओर यात्रा: संगीतकार भौतिक वाद्य या कंठ से आहत नाद उत्पन्न करता है। निरंतर रियाज और ध्यान से ध्वनि इतनी सूक्ष्म हो जाती है कि वह साधक को आंतरिक मौन की ओर ले जाती है, जो अनाहत का प्रवेश द्वार है।

* तंबूरे (तानपूरे) का प्रयोग: तंबूरे की झंकार और उसके स्वरों के बीच का खाली स्थान अनाहत नाद की प्रतीति करवाता है। तंबूरे से निकलने वाले स्वयंभू स्वर बिना किसी अतिरिक्त आघात के गूँजते हैं, जो अनाहत का प्रयोगात्मक उदाहरण हैं।

* आलाप और मींड की साधना: ध्रुपद या खयाल गायकी में जब बिना शब्दों के केवल आलाप या लंबी मींड ली जाती है, तो दो स्वरों के बीच का सूक्ष्म अंतराल आंतरिक शून्यता को दर्शाता है।

* नादानुसंधान और प्राणायाम: संगीत साधक गायन से पहले प्राणायाम और ॐ का उच्चारण करते हैं। यह क्रिया कुंडलिनी ऊर्जा को जाग्रत कर अनहद् चक्र को सक्रिय करती है, जिससे संगीत में गहराई और स्थिरता आती है।

दार्शनिक बनाम प्रयोगात्मक तुलना

पक्ष	दार्शनिक	प्रयोगात्मक
माध्यम	विचार ध्यान और आध्यात्मिक ग्रंथ।	कंठ वाद्य तंबूरा और निरंतर रियाज।
अनुभूति	अंतरात्मा और चेतना के स्तर पर।	सुर लय और स्वयंभू स्वरों के रूप में।
लक्ष्य	मोक्ष और ब्रह्म से तादात्म्य स्थापित करना।	एकाग्रता, मानसिक शांति और कला की पूर्णता।

निष्कर्ष: अनाहत नाद संगीत का वह आध्यात्मिक केंद्र है जो कला को साधना में परिवर्तित कर देता है। यह केवल कानों का विषय नहीं बल्कि आत्मा का साक्षात्कार है। एक संगीतज्ञ की वास्तविक उपलब्धि केवल बाहरी प्रशंसा प्राप्त करना नहीं, बल्कि अपने भीतर गूँजने वाले उस अनहद को सुनना है। भारतीय संगीत इसी मोक्षगामी परंपरा का संवाहक है। संगीत में अनाहत नाद का विवेचन यही सिद्ध करता है कि संगीत केवल मनोरंजन नहीं बल्कि दृश्य (आहत) के माध्यम से अदृश्य (अनाहत) को छूने का एक वैज्ञानिक मार्ग है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

खन्ना जतिन्द्र सिंह, नाद और संगीत, अभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ़-1996।

गौतम चमन लाल, हठयोग प्रदीपिका, संस्कृति संस्थान, बरेली-2005।

चौधरी सुभाष रानी, संगीत के प्रमुख शास्त्रीय सिद्धान्त, कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रिब्यूटर्स नई दिल्ली-2017।

योगेश्वरानन्द परमहंस, ब्रह्म विज्ञान, योग निकेतन ट्रस्ट, नई दिल्ली-110026।

बठला, (डॉ.) क्यूटी, भारतीय संगीत शास्त्र की दार्शनिक पृष्ठभूमि, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रिब्यूटर्स नई दिल्ली – 110002।

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.